बड़े लोगों का बचपन

पाब्लो पिकासो

महान पेंटर

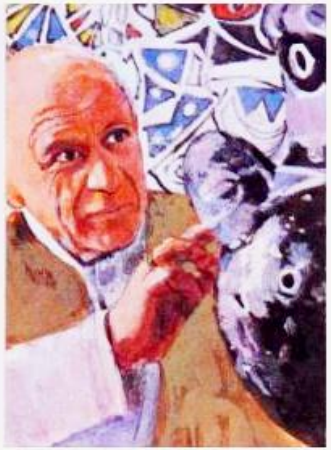

नीचे: कोरुन्ना में, पाब्लो अपने पिता की कबूतर के चित्र बनाने में मदद करने लगा.

पाब्लो रुइज़ पिकासो अपने पिता की आँखों का तारा और अपने परिवार का प्रिय था. कई बड़ी चचेरी बहनों के बीच में वो एकमात्र लड़का था. उसने उसे काफी महत्वपूर्ण बनाया था, लेकिन उसके पिता उसे विशेष रूप से प्यार करते थे, क्योंकि यह स्पष्ट था कि वो एक कलाकार बनने जा रहा था.

मामा और पापा कहने से पहले ही पाब्लो "पेंसिल" शब्द बोलने लगा था. जब वो छोटा था, तो वो घंटों अकेले बिताता था, और जानवरों और लोगों के रमणीय छोटे-छोटे चित्र बनाता था. यदि उसकी माँ उसे चौक में खेलने के लिए भेजतीं तो वहां वो पेड़ों के नीचे की धूल में किसी डंडी से चित्र बनाता था. उसके पसंदीदा मॉडलों में से एक उसकी छोटी बहन लोला थी.

पाब्लो के पिता डॉन जोस रुइज़ दक्षिणी स्पेन के मलागा में संग्रहालय के क्यूरेटर थे. उन्हें बहुत कम वेतन मिलता था, लेकिन क्योंकि वहां करने के लिए ज्यादा काम नहीं था इसलियर वे अपने शौक का अभ्यास करते थे और कबूतरों के चित्र बनाते थे.

डॉन जोस को कबूतरों का शौक था. वो उन्हें मृत या जीवित, एक और दो में और दर्जनों में चित्रित करते थे. कभी-कभी वो उनका कागज पर चित्र बनाते थे और फिर उन्हें काटकर कैनवास पर चिपका देते थे. कभी-कभी वो अपनी तस्वीरों पर असली पंख चिपका देते थे. वो पेंटिंग की तकनीक के बारे में बहुत कुछ जानते थे और उन्होंने वो सब पाब्लो को भी सिखाया.

मलागा में जीवन बहुत सुखद था. गर्म, भूमध्यसागरीय की धूप में पिता और पुत्र समुद्र के किनारे पर नावों को देखने के लिए या खुले बाजारों में घूमने के लिए टहलते थे. उनकी एक अजीब जोड़ी थी. डॉन जोस लंबे और पतले थे, लाल बाल और दाढ़ी, उदास आँखें और मूंछें थी. वो इतने शर्मीले और सही थे कि उन्हें "अंग्रेज" उपनाम दिया गया था. पाब्लो अपने पिता के बिल्कुल विपरीत था. उसकी अपनी माँ की तरह छोटी, मज़बूत बनावट थी; उसके सीधे, काले बाल और चमकदार काली आँखें थीं जो हर चीज़ पर ध्यान देती थीं.

बेचारे डॉन जोस को अपनी अविवाहित बहनों के साथ-साथ अपनी पत्नी और बच्चों को भी रखना पड़ता था, इसलिए परिवार में हमेशा पैसों की कमी रहती थी.

फिर, जब पाब्लो 10 वर्ष का हुआ, तो उसके पिता ने कोरुन्ना के एक माध्यमिक विद्यालय में एक कला शिक्षक के रूप में नौकरी करने का फैसला किया.

अगले चार वर्षों तक पाब्लो ने अपने पिता के साथ कोरुन्ना में अध्ययन किया. वो पेंटिंग करने के लिए इतना उत्सुक था कि उसने सामान्य स्कूल के काम की उपेक्षा की. अब तक उसे कबूतर के चित्र बनाने में अपने पिता की मदद करने की अनुमति मिल गई थी. अब वो उन्हें इतनी अच्छी तरह से बना रहा था कि डॉन जोस ने उसे अपने पेंट, ब्रश और पैलेट बेटे को सौंप दिए और कहा: "अब तुम मुझसे बेहतर कलाकार हो, अब मैं आगे कभी पेंट नहीं करूंगा."

उसके तुरंत बाद, 1895 में, डॉन जोस को बार्सिलोना के स्कूल ऑफ़ फाइन आर्ट्स में एक बेहतर नौकरी मिली. एक बार फिर वे भूमध्य सागर के सूरज का आनंद ले सकते थे.

बार्सिलोना में, टीचर पाब्लो की प्रतिभा पर चकित थे. वो अपने हाथों से कुछ भी करने में सक्षम था. पाब्लो ने न केवल पेंट के साथ, बल्कि मिट्टी, कार्डबोर्ड, कपड़े और हरेक उस सामग्री के साथ काम किया, जो उसे पसंद आई. उसके पिता को उम्मीद थी कि वो अब खूब पैसा कमाएगा और परिवार की मदद करेगा. इसलिए उन्होंने पाब्लो को काम करने के लिए अपना खुद का एक स्टूडियो दे दिया. वहां उसने जो पहली तस्वीर बनाई, वो "साइंस एंड चैरिटी" नामक एक उदास बीमार-बिस्तर वाला दृश्य था. पिता ने उस चित्र में एक डॉक्टर के रूप में पोज़ किया. मैड्रिड में ललित कला की राष्ट्रीय प्रदर्शनी में इस पेंटिंग को सम्मानजनक उल्लेख मिला, और मलागा में एक प्रदर्शनी में उसे स्वर्ण पदक मिला.

पाब्लो को वैसा नहीं लगा. वो चित्रकला की अपनी एक विशेष शैली विकसित करना चाहता था.

जब वह 16 साल का था, तब पाब्लो रॉयल अकादमी में दाखिला लेने के लिए मैड्रिड गया. उसके पिता उसे ज्यादा पैसे नहीं दे सके इसलिए पाब्लो शहर के सबसे गरीब हिस्से में एक छोटे से कमरे में जाकर रहा. उसने पाया कि अकादमी उसे कुछ भी नया नहीं सिखा सकती थी और चूंकि पेंटिंग सामग्री महंगी थी, इसलिए उसने धीरे-धीरे अपनी कक्षा में जाना बंद कर दिया. उसकी बजाए, वो मैड्रिड की सड़कों पर घूमता, और वहां जो कुछ भी हो रहा था उसके चित्र बनाता रहा. उसने मेहनतकश कामकाजी लोगों, हंसने वाले लोगों और गंदगी और गरीबी में जीने लोगों के चित्र बनाए.

उसके चित्र सरल और स्पष्ट थे, लेकिन उसका परिवार उन्हें समझ नहीं सका. वो ऐसे भयानक लोगों के साथ क्यों घुलमिल गया? उन्हें लगा कि पाब्लो, परिवार को नीचा दिखा रहा था.

धीरे-धीरे पाब्लो अपने परिवार से और खासकर अपने पिता से दूर होता गया. उसने रुइज़ नाम छोड़ दिया और केवल अपनी मां का नाम पिकासो रखा.

पिछले 60 वर्षों में पिकासो ने पेंटिंग की कई नई शैलियों का विकास किया. आजकल उनका छोटे से छोटे काम भी एक बड़ी कीमत पर बिकता है, लेकिन अगर उसका परिवार अभी भी जीवित होता, तब भी वे उसके चित्रों को "सम्मानजनक" नहीं पाते.